नव जीवन का स्वागत

पर्वत आज अपने आकार से बड़ा क्यूँ है
सरिता का प्रवाह आज मेरी ओर मुड़ा क्यूँ है
अपने झोंकों से हवा किसे सुलाने का अभ्यास कर रही है
कनेल के फूलों से गुलाब की खुशबू क्यूँ बिखर रही है

समुद्र के गर्जन से क्यूँ गूँज रहे हैं संगीत के स्वर
चाँदनी क्यूँ घोल रही धरती में शीतलता के इतर
आकाश क्यूँ अपनी ऊँचाइयों से उतर छू रहा है मुझे
सूखी मिट्टी से सोंधी महक का भान क्यूँ हो रहा है मुझे

प्रकृति किसकी प्रतीक्षा में बाँहें फैलाये खड़ी है
समय की सुई किसके स्वागत में ठहरी पड़ी है
किसकी आहट सुनने को शब्द भी व्याकुल है
किसके दर्शन करने को दृष्टि भी आकुल है

अपनी जीवंतता से जीवन नये जीवन का निर्माण कर रहा है
ईश्वर अपनी तूलिका से एक और श्रेष्ठ सोपान रच रहा है
किसी शिल्पकार के शिल्प को साकार रूप मिल रहा है
किसी माँ की तपस्या का फल इस संसार को मिल रहा है

नयन खुलें जब पहली बार, तो मधुरिम हो दृश्य चँहु ओर
नासिका जो ग्रहण करे वायु, सुगंध सम्पूरित हो उसका हर पोर
शब्द जो प्रवेश करें कानों में, संगीत लहरियाँ हों उनमें समाहित
प्रथम स्पर्श हो जिस परिवेश का, नवरस से हो वह अंकित

प्रकृति आतुर है नवजीवन के आलिंगन को
आओ हे मानस पुत्र कृतार्थ करो सब के मन को